मंत्रोचार के सामान्य नियम

1. मात्राएँ तीन प्रकार की होती हैं-
   अ. ह्रस्व (लघु) मात्रा (मात्रा-१) अ, इ, उ, ऋ।
   ब. दीर्घ (गुरु) मात्रा (मात्रा-२) आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः।
   स. प्लुत मात्रा (मात्रा-३) ॐ या अन्यत्र ३ के पहले वाला वर्ण।
2. **बलाघात का निमय-** संयुक्ताक्षर (क्ष, त्र, ज्ञ, क्त, प्य, ह्न, ह्य, ह्म, श्र, द्य, प्र, आदि) या **.** के पूर्व लघु वर्ण (स्वर) आने पर बलाघात पूर्वक (एक मात्रा के बराबर मंत्रोच्चार रोककर) उच्चारण करते हैं।
3. **ऽ (अवग्रह) -**
   अ. वैदिक मन्त्रों में ऽ आने पर दीर्घ मात्रा और दीर्घ एवं ह्रस्व को और ह्रस्व करके उच्चारण किया जाता है।
   ब. लौकिक मन्त्रों में विशेष परिस्थितियों को छोड़कर अवग्रह (ऽ) का कोई उच्चारण नहीं होता।
4. **: (विसर्ग)-**
   अ. वैदिक मंत्रों में : का उच्चारण मात्रा के अनुरूप किया जाता है। जैसे- यजत्राः (यजत्राहा), कैः (कइहि) तथा द्यौः (द्यउहु)।
   ब. लौकिक मंत्रों में विसर्ग (:) का उच्चारण आधे 'ह्' के रूप में ही होता है।
5. संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषद् के मंत्र वैदिक मंत्र कहे जाते हैं, शेष मन्त्र लौकिक हैं।
6. **अ.** वैदिक मन्त्रों का उच्चारण स्थिर स्वर में होता है।
   ब. लौकिक मन्त्रों का उच्चारण गेय स्वर में होता है।
7. **बीज मन्त्र-** बीज मन्त्रों का उच्चारण अनुनासिक होता है।
   जैसे- ह्रीं, श्रीं, क्लीं।
8. **. (ग्वं/.)** -वैदिक मंत्रों में अनुस्वार के पश्चात् श, ष, स, ह, र आने पर ः (अनुस्वार) **.** में बदल जाता है। **(अनुस्वारस्य . स्यात् शषसहरेफेषु)।**
9. **संयुक्ताक्षर हैं- (अ)** क्+ष= क्ष **(ब)** त्+र= त्र **(स)** ज्+ञ= ज्ञ।
10. अल्प विराम या पूर्ण के पहले वाला वर्ण आवश्यकतानुसार दीर्घ के समान बोला जाता है।
11. मन्त्रों का समापन प्लुतवत् होता है। अर्थात्- अन्तिम व्यंजन के वर्ण को विलम्बित करके बोला जाता है।

मंत्रोचार के सामान्य नियम

1. मात्राएँ तीन प्रकार की होती हैं-
   अ. ह्रस्व (लघु) मात्रा (मात्रा-१) अ, इ, उ, ऋ।
   ब. दीर्घ (गुरु) मात्रा (मात्रा-२) आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः।
   स. प्लुत मात्रा (मात्रा-३) ॐ या अन्यत्र ३ के पहले वाला वर्ण।
2. **बलाघात का निमय-** संयुक्ताक्षर (क्ष, त्र, ज्ञ, क्त, प्य, ह्न, ह्य, ह्म, श्र, द्य, प्र, आदि) या **.** के पूर्व लघु वर्ण (स्वर) आने पर बलाघात पूर्वक (एक मात्रा के बराबर मंत्रोच्चार रोककर) उच्चारण करते हैं।
3. **ऽ (अवग्रह) -**
   अ. वैदिक मन्त्रों में ऽ आने पर दीर्घ मात्रा और दीर्घ एवं ह्रस्व को और ह्रस्व करके उच्चारण किया जाता है।
   ब. लौकिक मन्त्रों में विशेष परिस्थितियों को छोड़कर अवग्रह (ऽ) का कोई उच्चारण नहीं होता।
4. **: (विसर्ग)-**
   अ. वैदिक मंत्रों में : का उच्चारण मात्रा के अनुरूप किया जाता है। जैसे- यजत्राः (यजत्राहा), कैः (कइहि) तथा द्यौः (द्यउहु)।
   ब. लौकिक मंत्रों में विसर्ग (:) का उच्चारण आधे 'ह्' के रूप में ही होता है।
5. संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषद् के मंत्र वैदिक मंत्र कहे जाते हैं, शेष मन्त्र लौकिक हैं।
6. **अ.** वैदिक मन्त्रों का उच्चारण स्थिर स्वर में होता है।
   ब. लौकिक मन्त्रों का उच्चारण गेय स्वर में होता है।
7. **बीज मन्त्र-** बीज मन्त्रों का उच्चारण अनुनासिक होता है।
   जैसे- ह्रीं, श्रीं, क्लीं।
8. **. (ग्वं/.)** -वैदिक मंत्रों में अनुस्वार के पश्चात् श, ष, स, ह, र आने पर ः (अनुस्वार) **.** में बदल जाता है। **(अनुस्वारस्य . स्यात् शषसहरेफेषु)।**
9. **संयुक्ताक्षर हैं- (अ)** क्+ष= क्ष **(ब)** त्+र= त्र **(स)** ज्+ञ= ज्ञ।
10. अल्प विराम या पूर्ण के पहले वाला वर्ण आवश्यकतानुसार दीर्घ के समान बोला जाता है।
11. मन्त्रों का समापन प्लुतवत् होता है। अर्थात्- अन्तिम व्यंजन के वर्ण को विलम्बित करके बोला जाता है।